निराला के कथा–साहित्य में व्यक्त नारी चेतना

माया रानी सुपुत्री श्री विनोद कुमार, एम.ए.(हिन्दी) यू.जी.सी, नैट (हिन्दी)
गांव कैरावांली, डाकखाना माखोसरानी, तह. व जिला सिरसा

निराला के कथा–साहित्य का बहुतांश नारी जीवन से संबंधित है। उनके चिन्तन के केन्द्र में नारी–जीवन की समस्याएँ बराबर नहीं हैं। नारी के सामाजिक एवं व्यक्तिगत अस्तित्व, नारी–स्वाधीनता, नारी–स्वावलम्बन तथा नारी के अधिकारों आदि को लेकर निराला अन्य तद्युगीन लेखकों के अपेक्षाकृत अधिक चिन्तित दिखाई देते हैं।

भारतीय समाज में यदि नारी की स्थिति का अवलोकन किया जाये तो वैदिक युग के प्रारम्भिक समय को छोड़कर नारी की स्थिति प्रायः दयनीय तथा मर्मांतक रही है। वैदिक युग में नारी अपने कर्मठ जीवन, त्याग एवं ममता आदि गुणों के कारण सम्मानीय थी। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसका प्रवेश था।[1] समाज तथा परिवार में नारी की भूमिका को महत्त्व दिया जाता था। उसके स्वाभीमान की रक्षा होती थी। जिस परिवार में नारी का निरादर होता था, उस परिवार को समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता था। नारी के माता रूप को परिवार में सर्वाधिक आदर सम्मान प्राप्त था। पारिवारिक सम्पत्ति पर पति के साथ–साथ पत्नी का भी अधिकार होता था। पति की अनुपस्थिति में पत्नी स्वामिनी होती थी।[2] विवाह के सम्बन्ध में भी कन्या को इच्छित वर चुनने का अधिकार था। माता–पिता के लिए पुत्री की इच्छा सर्वोपरि होती थी। विवाह–पूर्व कन्या और वर को एक–दूसरे के सम्बन्ध में जानने का अधिकार था।[3] वैदिक युग में नारियाँ राजनीति में भी भाग लेती थीं। उन्हें शासन सम्बन्धी शिक्षा भी दी जाती थी तथा कभी–कभी युद्धों में भी जाया करती थीं।[4] वैदिक युग में नारियों को शिक्षा ग्रहण करने को भी अधिकार था। बालक–बालिकाएँ एक ही गुरूकुल में शिक्षा प्राप्त करते थे।

दुर्भाग्यवश, कालान्तर में नारियों की स्थिति में परिवर्तन आता गया। उनके सारे अधिकार छिनते गए। धीरे–धीरे वे पुरुष की आश्रिता बनकर रह गई। समाज एवं धर्म के द्वारा उन पर अनेक प्रतिबन्ध लगा दिये गये। धार्मिक विधानों के अन्तर्गत सतीप्रथा, विधवा–विवाह–निषेध, बाल–विवाह, बहुपत्नी–विवाह आदि कुप्रथाओं को प्रश्रय मिला।[5] निर्धन लोगों में बालहत्या भी प्रचलित हुई। नारियों को शिक्षा के

[1] उमाशुक्ल : भारतीय नारी अस्मिता की पहचान, 1994 पृ0 13–14

[2] चन्द्रबली त्रिपाठी : भारतीय समाज में नारी आदर्शों का विकास, 1967, पृ0 22, 144, 180

[3] रामधारी सिंह दिनकर : संस्कृति के चार अध्याय, 1970 पृ0 61

[4] चन्द्रबली त्रिपाठी : भारतीय समाज में नारी आदर्शों का विकास, 1967, पृ0 22, 194–198

[5] उमाशुक्ल : भारतीय नारी अस्मिता की पहचान, 1994 पृ0 13

अधिकार से वंचित कर दिया गया।[6] नारी की यह अबला वाली स्थिति भारतीय जनजागरण काल तक बनी रही।

उन्नीसवीं शताब्दी की सामाजिक समस्याओं में विधवा–विवाह एक जटिल समस्या थी। नारी के लिए वैधव्य का होना अत्यन्त दुःसह स्थिति थी। बाल–विवाह के कारण प्रायः अल्पायु में लड़की विधवा हो जाती थी। विधवा होते ही नारी को सारे मानवोचित अधिकारों से वंचित कर दिया जाता था। अपने आर्थिक, पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता था। अपने पति की सम्पत्ति पर उसका अधिकार नहीं होता था।

सती–प्रथा हिन्दू धर्म एवं समाज की कुप्रथाओं में से सर्वाधिक क्रूर प्रथा थी। पति की मृत्यु के बाद पत्नी को उसी चिता पर जल जाना पड़ता था। इस प्रथा का सर्वाधिक क्रूर पक्ष था कि कोई पत्नी अगर जलकर न मरना चाहे तो भी उसे जलकर मरने के लिए विवश किया जाता था। यदि कोई नारी किसी प्रकार सती होने से बच जाती थी तो उसे तिरस्कृत होकर वैधव्यपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता था।[7]

उन्नीसवीं शताब्दी में वेश्यावृत्ति भी एक गंभीर सामाजिक समस्या थी। सामान्य रूप से आश्रयहीन स्त्रियाँ अपनी आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति हेतु वेश्यावृत्ति अपनाती थीं। इसके अतिरिक्त तद्युगीन राजाओं, ज़मींदारों ने भी इस वृत्ति को बढ़ावा दिया। समाज में सम्मानित कहा जाने वाला उच्च वर्ग अपने मनोरंजन के लिए वेश्या नृत्य का आयोजन करता था। ज़मींदार वर्ग वेश्याओं को रक्षिता रूप में रखता था। समाज में वेश्याओं को हीन दृष्टि से देखा जाता था। उन्हें कोई सामाजिक अधिकार प्राप्त नहीं था। वेश्या रूप में नारी समाज में घृणा का पात्र बनकर रह गई थी। इसके लिए पुरुष समाज उत्तरदायी था।[8]

बाल–विवाह एवं बहुपत्नी–विवाह जैसी अमानवीय कुप्रथाएँ भी तद्युगीन समाज में प्रचलित थीं। पुरुषों को एक से अधिक विवाह करने और पत्नी रखने का अधिकार था।[9] लोग अपनी लड़कियों का विवाह कम आयु में ही कर देते थे। इन दोनों कुप्रथाओं के प्रचलित होने का कारण लोगों की निर्धनता थी। इसलिए लड़कियों को बोझ समझा जाता था।[10] नारी की इस असहाय स्थिति का कारण उसकी अज्ञानता थी। उस समय नारियों को शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार नहीं था। लोग नारी–शिक्षा के विरोधी थे। उनका विचार था कि नारियाँ पढ़कर धर्मविरुद्ध आचरण करने लगेंगी। विशेषकर भारतीय

[6] ए.आर.देसाई : भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, 1976, पृ0 220–221

[7] ए.आर.देसाई : भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, 1976, पृ0 220

[8] चन्द्रमोहन अग्रवाल : (सम्पादक) भारतीय नारी विविध आयाम, भाग–2, 1994 पृ. 134–135

[9] विपिनचन्द्र : भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, 1998, पृ0 48

[10] विपिनचन्द्र : आधुनिक भारत (अनु. श्याम बिहारी राय) 1992, पृ0 161

समाज पाश्चात्य शिक्षा का विरोधी था।[11] ऐसी विषम परिस्थितियों में जब कि समाज में नारी–शिक्षा वर्जित थी, नारी के आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बिनी होने का प्रश्न ही नहीं उठता था। नारी का नौकरी करना लगभग असंभव था। वह पूर्ण रूप से पुरुषों पर आश्रित थीं। उसे उत्तराधिकार में सम्पत्ति नहीं मिलती थी। तद्युगीन नारी की विषम परिस्थितियों को विपिनचन्द्र ने इन शब्दों में व्यक्त किया है – ''महिलाओं की हालत तो सबसे ज्यादा खराब थी। लड़की का जन्म दुर्भाग्यपूर्ण माना जाता था, उसकी शादी बोझ समझी जाती थी, विधवा होने पर तो उसे कोई पूछता ही नहीं था। कई इलाकों में तो हालत यह थी कि लड़की पैदा होते ही उसे मार डालते थे। अगर किसी तरह लड़की इससे बच भी गई तो उसे बाल–विवाह की यातना झेलनी पड़ती थी। लड़की की शादी जैसे–तैसे कर दी जाती थी, सामाजिक अपयश न हो इसलिए किसी के साथ भी उसकी गाँठ बाँध दी जाती थी।''[12] भारतीय नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। उसे समाज में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक किसी भी प्रकार के अधिकार प्राप्त नहीं थे।

निराला ने अपनी पहली कथाकृति 'अप्सरा' में वेश्य–समस्या पर विचार किया है। इस उपन्यास की नायिका कनक के माध्यम से वेश्याओं को समाज में गरिमापूर्ण स्थान दिलाने, पारिवारिक जीवन यापन करने, अन्य स्त्रियों की भाँति सामाजिक अधिकार दिलाने का प्रयास किया है। इस विषय में बलदेव प्रसाद मेहरोत्रा ने कहा है – ''निराला ने समाज में पतिता समझी जाने वाली वेश्याओं में नारी गरिमा का दर्शन किया और उन्हें प्रतिष्ठित करने के लिए उन्होंने अपनी कृतियों में नायिका का आसन प्रदान किया।''[13]

वेश्याओं के सम्बन्ध में निराला का स्पष्ट विचार था कि यदि वेश्याओं को अवसर मिले, तो वे भी सामाजिक मर्यादाएँ निभा सकती हैं। अपना जीवन सामान्य नारी की भाँति बिता सकती हैं। वेश्याओं में भी सामाजिक जीवन जीने की प्रबल इच्छा होती है।

निराला ने अपने इस विचार को 'अप्सरा' उपन्यास के आरम्भ में ही स्पष्ट किया है। उपन्यास की नायिका कनक वेश्या के जीवन को तिलांजलि देने की घोषणा करती है। ''कनक ने कहा, ''मैं रईसों की महफिल में गाना नहीं गाऊँगी।'' कन्या के विशद अभिप्राय को ताड़कर माता ने कहा, ''तुम इससे बचकर भी अपने ही जीने से छत पर जा सकती हो, जहाँ सबकी तरह तुम्हें भी आकाश तथा प्रकाश का बराबर अंश मिल सकता है।''[14]

---

[11] विपिनचन्द्र : आधुनिक भारत (अनु. श्याम बिहारी राय) 1992, पृ0 161

[12] विपिनचन्द्र : भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, 1998, पृ0 47–48

[13] बलदेव प्रसाद मेहरोत्रा : कथाशिल्पी निराला, 1984, पृ0 14

[14] निराला, अप्सरा, 1994, पृ0 22–23

विचारणीय प्रश्न यह है कि वेश्याओं द्वारा वेश्यावृत्ति त्यागने पर समाज उन्हें अपनाता है या नहीं? समाज द्वारा वेश्याओं को अपनाने सम्बन्धी दृष्टिकोण को लेकर निराला अधिक चिन्तित दिखाई देते हैं। इसीलिए वे समाज से आग्रह करते हैं कि समाज के लोग वेश्याओं को अपनाएँ। उन्हें अपने घरों में स्थान दें। उनसे विवाह–सम्बन्ध स्थापित करें। विवाह–सम्बन्ध स्थापित किये बिना वेश्याओं को इस समस्या से मुक्ति नहीं मिल सकती है।''[15] निराला अपने इस विचार को 'अप्सरा' उपन्यास में प्रतिष्ठित करते हैं। उपन्यास का नायक राजकुमार वेश्या नायिका कनक से न केवल प्रेम करता है वरन् उससे विवाह भी करता है।''[16]

निराला मानवीय संवदेनाओं और उच्चतर सामाजिक मूल्यों का आदर करने वाले साहित्यकार थे। मनुष्यता उनका सबसे बड़ा धर्म था।[17] वे वेश्याओं को भी सम्मान की दृष्टि से देखते थे। यही कारण है कि वे कनक को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करते हैं। उनकी वेश्या नायिका सभी प्रकार की सामाजिक, पारिवारिक मर्यादाओं को निभाने में सक्षम है। डॉ. निर्मल जिन्दल के शब्दों में – ''प्रस्तुत उपन्यास में इस तथ्य को व्यक्त किया गया है कि वेश्यावृत्ति के मन में भी उच्च भावनाएँ हों सकती हैं और अवसर मिलने पर वह पारिवारिक और सामाजिक मर्यादा को सहर्ष निभा सकती हैं।''[18]

निराला ने अपने उक्त विचारों को अपनी कथा–कृतियों के पात्रों के माध्यम से भी व्यक्त किया है। 'अप्सरा' की नायिका कनक एक आधुनिक शिक्षित नारी है। वह अपने जीवन का प्रत्येक निर्णय लेने में सक्षम है। वह संकट की घड़ी में घबराती नहीं वरन् संकट का समाधान ढूंढने का प्रयास करती है। वह सर्वगुणसम्पन्न नायिका है। उल्लेखनीय है कि कनक के स्वाभाविक, स्वतन्त्र, सहनशील आदि गुणों का श्रेय निराला उसकी शिक्षा को देते हैं। उसका शिक्षित होना ही उसे पुरुष प्रधान भारतीय समाज में आत्मनिर्भर व स्वतंत्र अस्तित्व के निर्माण में सहायक होता है। इसी प्रकार 'अलका' की नायिका अलका को भी निराला आधुनिक शिक्षित नारी के रूप में प्रस्तुत करते हैं। अलका जब तक एक अशिक्षित युवती है तब तक वह किसी भी समस्या से लड़ने में सक्षम नहीं है और वही अलका जब शिक्षित हो जाती है तो जमींदार मुरलीधर के जुल्म के विरुद्ध प्रतिकार कर नारी स्वतन्त्रता, अस्मिता, अस्तित्व को नया आयाम प्रदान करती है।

---

[15] आशिक बालौत : निराला के कथा–साहित्य में स्वच्छन्दतावादी तत्व, 1996, पृ0 10

[16] निराला, अप्सरा, 1994, पृ0 58, 138

[17] कुसुम वार्ष्णेय, निराला का कथा–साहित्य, 1971, पृ0 7

[18] डॉ. निर्मल जिन्दल : निराला का गद्य साहित्य, 1971, पृ0 56

निराला नारी की सामाजिक स्वतन्त्रता के साथ–साथ उसकी आर्थिक आत्मनिर्भरता के सवाल को भी गहराई के साथ उठाते हैं। उनके विचार में जब तक नारी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होगी तब तक उसे पुरुष की आश्रिता बनकर रहना पड़ेगा। अर्थ को निराला नारी के लिए सुरक्षा साधन मानते हैं। यही कारण है कि निराला के कथा–साहित्य की नारी पात्र आर्थिक बन्धन से मुक्त होने तथा आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करती है। 'सखी' कहानी की पात्र लीला एक शिक्षित नारी है। लड़कों को ट्यूशन पढ़ाकर अपना और अपने घर वालों का खर्च चलाती है।

इस प्रकार निराला अपने कथा–साहित्य में तद्युगीन नारी–जीवन से सम्बन्धित सभी समस्याओं पर विचार–विमर्श करते हैं। वेश्या–समस्या, विधवा–समस्या, नारी–शिक्षा, आर्थिक–आत्मनिर्भरता, नारी–स्वाधीनता आदि समस्याओं पर विचार विमर्श कर नारी को आधुनिक बनाने पर जोर दिया है। वे नारी को किसी भी दृष्टि ये पुरुष से कम नहीं मानते हैं। वे नारी को सभी अधिकार देने के पक्ष मे हैं जो पुरुष समाज को प्राप्त हैं। नारी–स्वाधीनता उनके कथा–साहित्य की मूल चेतना है।

निष्कर्ष : निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि निराला ने नारी की दशा सुधार, स्वतन्त्र तथा स्वाभाविक विकास एवं सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए नारी–शिक्षा को मूल मन्त्र घोषित किया है। नारी को आत्मनिर्भर बनाने के लिए निराला ने सामाजिक स्वतन्त्रता और आर्थिक स्वावलम्बन पर विशेष बल दिया है। नारी को सामाजिक रूप से स्वतन्त्र व्यक्तित्व प्रदान करने के लिए निराला ने धर्म और समाज के रूढ़िवादी विचारों पर कुठाराघात किया है। निराला नारी को सामाजिक स्वतन्त्रता देने के पक्ष में थे। इसीलिए वे अपनी कथा की नायिकाओं को स्वतन्त्र एवं प्रगतिशील व्यक्तित्व प्रदान करते हैं।